- विषय-सूची -

विषय	पृष्ठ
१ स्पर्श अनुयोगद्वार	
टीकाकारका मङ्गलाचरण	१
स्पर्श अनुयोगद्वारके कथनकी सूचना	१
स्पर्श अनुयोगद्वारके १६ अधिकारोंका नामनिर्देश	२
स्पर्शनिक्षेपकी प्रतिज्ञा	२
स्पर्शनिक्षेपके १३ भेद	३
स्पर्श नयविभाषणताके कथनकी प्रतिज्ञा	३
तेरह प्रकारके स्पर्शनिक्षेपोंका कथन न कर पहले स्पर्शनयविभाषणताके कथन करनेका कारण	३
कौन नय किस स्पर्शको स्वीकार करता है, इसका विचार	४
नैगम, व्यवहार और संग्रह नयकी अपेक्षा	४
ऋजुसूत्रनय और शब्दनयकी अपेक्षा	६
नामस्पर्शका विचार	८
स्थापनास्पर्शका विचार	९
द्रव्यस्पर्शका विचार	११
अमूर्त जीवका मूर्त पुद्गलके साथ सम्बन्ध कैसे होता है, इस शंकाका समाधान	११
संसारी जीव यदि मूर्त है तो उसके मूर्तत्वका अभाव कैसे होता है, इस शंकाका समाधान	११
जीव और पुद्गलका आदि बन्ध क्यों नहीं बनता	१२
द्रव्यकी स्पर्श संज्ञाका कारण	१२
द्रव्यस्पर्शके ६३ भङ्ग	१३
एकक्षेत्रस्पर्श विचार	१६
अनन्तरक्षेत्रस्पर्श विचार	१७
देशस्पर्श विचार	१८
परमाणुके सावयवत्वकी सिद्धि	१८
त्वक्स्पर्श विचार	१९
त्वक् और नोत्वक्का लक्षण	१९
त्वक् और नोत्वक्स्पर्शके ८ भङ्ग	२०
सर्वस्पर्श विचार	२१
एक परमाणुका दूसरे परमाणुके साथ किस प्रकारका संयोग होता है, उसका विचार	२१
स्पर्शस्पर्श विचार	२४
स्पर्शस्पर्शके आठ भेद	२४
मतान्तर और उसका निराकरण	२५
आठ स्पर्शोंके २५५ संयोगी भङ्ग	२५
कर्मस्पर्श विचार	२६
कर्मस्पर्शके आठ भेद	२६
सब कर्मोके संयोगसे कुल ६४ भङ्ग	२६
उनमें ३६ अपुनरुक्त भङ्ग	२९
बन्धस्पर्श विचार	३०
बन्धस्पर्शके मुख्य पांच भेद	३०
औदारिक आदि शरीरोंके संयोगसे होनेवाले २३ भङ्ग	३१
उनमें १४ अपुनरुक्त भङ्ग	३३
भव्यस्पर्श विचार	३४
भावस्पर्श विचार	३५
प्रकृतमें कर्मस्पर्श विवक्षित है	३६
महाकर्मप्रकृतिप्राभृतमें द्रव्यस्पर्श, सर्वस्पर्श और कर्मस्पर्श विवक्षित है	३६
कर्मस्पर्शका शेष १५ अधिकारोंके द्वारा कथन नहीं करनेका प्रयोजन	३६
२ कर्म अनुयोगद्वार	
टीकाकारका मङ्गलाचरण	३७
कर्म अनुयोगद्वारके कथनकी प्रतिज्ञा	३७
कर्म अनुयोगद्वारके १६ अधिकार	३८
कर्मनिक्षेपका विचार	३८
कर्मनिक्षेपके दस भेद	३८
कौन नय किस निक्षेपको स्वीकार करता है, इस बातका विचार	३८
नैगम, व्यवहार और संग्रह नयकी अपेक्षा उसका विचार	३९

विषय	पृष्ठ
ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा विचार	३९
शब्द नयकी अपेक्षा विचार	४०
नामकर्मका विचार	४०
स्थापनाकर्मका विचार	४१
द्रव्यकर्मका विचार	४३
प्रयोगकर्मका विचार	४३
प्रयोगकर्मके तीन भेद और स्वामी	४४
समवदानकर्मका विचार	४५
अध:कर्मका विचार	४६
ईर्यापथकर्म और उसके स्वामीका विचार	४७
पुरानी तीन गाथाओंके आधारसे ईर्यापथकर्मका विशेष विवेचन	४८
प्रथम गाथाका अर्थ	४८
ईर्यापथकर्ममें प्रदेश व अनुभागका विचार	४९
ईर्यापथकर्म सातारूप है, इस प्रसंगसे सुखका विचार	५१
दूसरी गाथाका अर्थ	५१
जिन देव आमय और तृष्णासे रहित क्यों हैं, इस बातका विचार	५३
तीसरी गाथाका अर्थ	५४
तप:कर्म विचार	५४
तप:कर्मके भेद–प्रभेद	५४
तपका लक्षण	५४
अनेषण तप और उसका फल	५५
अवमौदर्य तप और उसका फल	५६
स्त्री और पुरुषके ग्रासका नियम	५६
वृत्तिपरिसंख्यान तप और उसका फल	५७
रसपरित्याग तप ओर उसका फल	५७
कायक्लेश तप और उसका फल	५८
विविक्तशय्यासन तप और उसका फल	५८
प्रायश्चित्त तप	५९
प्रायश्चित्तके दस भेद और उनका स्वरूप	६०
विनय तप	६३
वैयावृत्त्य तप	६३
व्युत्सर्ग तप	६४
ध्यान तप	६४
ध्यानके चार अधिकार	६४
ध्याताका विशेष विचार	६४
ध्येयका विशेष विचार	६९
ध्यानके दो भेद	७०
धर्मध्यानके चार भेद	७०
आज्ञाविचय धर्मध्यान	७०
अपायविचय धर्मध्यान	७२
विपाकविचय धर्मध्यान	७२
संस्थानविचय धर्मध्यान	७२
धर्मध्यान और शुक्लध्यानका विषय एक होकर भी उन दोनों ध्यानोंमें भेदोका कारण	७४
सकषाय जीव धर्मध्यानका अधिकारी है	७४
कषायरहित जीव शुक्लध्यानका अधिकारी है	७४
ध्यानसम्बन्धी अन्य विशेषताएँ	७५
धर्मध्यानमें तीन शुभ लेश्याएँ होती हैं	७६
धर्मध्यानका फल	७७
शुक्लध्यानमें शुक्ल विशेषणका कारण	७७
शुक्लध्यानके चार भेद	७७
पृथक्त्ववितर्कवीचार	७७
एकत्ववितर्कअवीचार	७९
दोनों शुक्लध्यानोंका आलम्बन	८०
दोनों शुक्लध्यानों व धर्मध्यानका फलविचार	८०
एकत्ववितर्कअवीचार ध्यानको अप्रतिपाती विशेषण न देनेका कारण तथा स्वामी विचार	८१
शुक्लध्यानके चिह्न	८२
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती ध्यानका विचार	८३
केवलज्ञानके कालमें सयोगी जिनके होनेवाली क्रियाओंका निर्देश	८३
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातीको ध्यान संज्ञा देनेका कारण	८६
व्युपरतक्रियानिवर्तिध्यानका विचार	८७
इसे ध्यानसंज्ञा देनेका कारण	८७
क्रियाकर्म विचार	८८
भावकर्म विचार	९०
यहां समवदान कर्मका प्रकरण है	९०
दस कर्मोंमेंसे छह कर्मोंकी अपेक्षा सत् संख्या आदि आठ अधिकारोंका निरूपण	९१
सदनुयोगद्वारनिरूपण	९१

विषय	पृष्ठ
द्रव्य प्रमाणानुगमनिरूपण	९३
छह कर्मोंकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताका स्पष्टीकरण	९३
क्षेत्रानुगम निरूपण	९८
स्पर्शनानुगम निरूपण	१००
कालानुगम निरूपण	१०७
अन्तरानुगम निरूपण	१३२
भावानुगम निरूपण	१७२
अल्पबहुत्व निरूपण	१७५
यहां कर्मके शेष अनुयोगद्वारोंका कथन न करनेका कारण	१९६
३. प्रकृति अनुयोगद्वार	
टीकाकारका मंगलाचरण	१९७
प्रकृतिके १६ अधिकार	१९७
प्रकृतिनिक्षेपके चार भेद	१९८
कौन नय किस निक्षेपको स्वीकार करता है, इस बातका निरूपण	१९८
नैगम, व्यवहार और संग्रह नयकी अपेक्षा	१९८
ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा	१९९
शब्दनयकी अपेक्षा	२००
नामप्रकृति विचार	२००
स्थापनाप्रकृति विचार	२०१
द्रव्यप्रकृतिके दो भेद व स्वरूपनिर्देश	२०३
आगमद्रव्यप्रकृतिके अर्थाधिकार	२०३
उपयोगके प्रकार	२०३
नोआगमद्रव्यप्रकृतिके दो भेद	२०३
नोकर्मप्रकृतिका विचार	२०४
कर्मप्रकृतिके आठ भेद	२०५
ज्ञानावरणके प्रसंगसे ज्ञानका स्वरूपनिर्देश व जीवके पृथक् अस्तित्वकी सिद्धि	२०६
दर्शनका स्वरूपनिर्देश	२०७
ज्ञानावरणकी पांच प्रकृतियाँ	२०९
पाँचों ज्ञानोंका स्वरूपनिर्देश	२०९
जीवके केवलज्ञानस्वभाव होनेपर भी पाँच ज्ञानोंकी उत्पत्तिका कारण सहित विवेचन	२१३
आभिनिबोधिकज्ञानावरणके भेद	२१६
अवग्रह आदिकी मुख्यतासे चार भेद	२१६
अवग्रहज्ञानका स्वरूपनिर्देश	२१६
ईहाज्ञानका स्वरूपनिर्देश	२१७
संशयप्रत्ययका अन्तर्भाव	२१७
ईहा अनुमानज्ञान नहीं है आदि विचार	२१७
अवायज्ञानका स्वरूपनिर्देश	२१८
धारणाज्ञानका स्वरूपनिर्देश	२१८
अवग्रहावरणीय कर्मके दो भेद	२१९
अर्थावग्रह और व्यञ्जनावग्रहका स्वरूप	२२०
व्यञ्जनावग्रह कर्मके चार भेद	२२१
शब्दके छह भेद व उनका स्वरूप	२२१
भाषाके भेद और उनके स्वामी	२२१
अक्षरात्मक भाषाके दो भेद और उनके बोलनेवाले	२२२
श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहका स्वरूप	२२२
शब्द-पुद्गल लोकान्त तक कैसे फैलते हैं, इसका विचार	२२२
शब्दोंके लोकान्त तक जानेमें कितना काल लगता है, इसका विचार	२२३
समश्रेणि और विषमश्रेणिसे आये हुए शब्द किस प्रकार सुने जाते हैं, इसका विचार	२२३
शेष व्यत्रजनावग्रहों व उनके आवरणोंका विचार	२२५
अर्थावग्रहावरणीयके छह भेद	२२५
सब इन्द्रियाँ अप्राप्त अर्थको ग्रहण करती हैं, इसकी सिद्धि	२२५
अर्थावग्रहावरणीयके छह भेदोंके नाम	२२७
अधिकारीभेदसे कौन इन्द्रिय कितने दूरके विषयको जानती है, इसका विचार	२२७
ईहावरणीय कर्मके छह भेद व विशेष विवेचन	२३०
अवयावरणीयके छह भेद	२३२
धारणावरणीयके छह भेद	२३२
आभिनिबोधिकज्ञानावरणके सब भेदोंका निर्देश	२३४
बहु आदि पदार्थोका स्वरूपनिर्देश	२३४
उच्चारणा द्वारा उन सब भेदोंका उल्लेख	२३९
आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी अन्य प्ररूपणा	२४१
अवग्रह, ईहा आदिके पर्याय नाम	२४२
आभिनिबोधिकके पर्याय नाम	२४४

विषय	पृष्ठ
श्रुतज्ञानावरणकर्मका विचार	२४५
श्रुतज्ञानका स्वरूपनिर्देश	२४५
श्रुतज्ञानावरणीयकी संख्यात प्रकृतियोंका निर्देश	२४७
अक्षरोंका प्रमाण	२४७
संयोगी अक्षरोंका प्रमाण व उनके लानेकी विधि आदि	२४८
यहां संयोगसे क्या लिया है, इसका विचार	२५०
संयोगी अक्षरका दृष्टांत	२५९
श्रुतज्ञानावरण कर्मकी २० प्रकारकी प्ररूपणा व स्वरूपनिर्देश	२६०
पर्यायज्ञानका स्वामी व विशेष विचार	२६२
पर्यायसमासज्ञान	२६३
पद श्रुतज्ञान	२६५
पदके तीन भेद	२६५
मध्यम पदमें अक्षरोंकी संख्या	२६६
सकल श्रुतके समस्त पदोंकी संख्या	२६६
पदसमास व संघात श्रुतज्ञान	२६७
अक्षर श्रुतके ऊपर छह प्रकारकी वृद्धिका निषेध	२६७
संघातसमास व प्रतिपत्ति श्रुतज्ञान	२६९
प्रतिपत्तिसमास आदि श्रुतज्ञानके शेष भेद	२६९
प्रतिसारीबुद्धिवाले जीवोंकी अपेक्षा श्रुतका विचार	२७१
श्रुतके बीस भेदोंका विशेष विचार	२७३
अङ्गबाह्य, ग्यारह अङ्ग और परिकर्म आदिका कहां अन्तर्भाव होता है, इसका विचार	२७६
श्रुतज्ञानके आवरणोंकी व्यवस्था	२७७
श्रुतज्ञानावरणीयके प्रसंगसे श्रुतके पर्यायवाची नाम और उनकी व्याख्या	२७९
अवधिज्ञानावरणीय कर्म और उसकी प्रकृतियाँ	२८९
अवधिज्ञानके दो भेद	२९०
पर्याप्त अवस्थामें अवधिज्ञानकी उत्पत्ति होती है, इसका सकारण विचार	२९०
किन्तु भवानुगामी अवधिज्ञान भवके प्रथम समयमें भी होता है, इस बातका निर्देश	२९१
भवप्रत्यय अवधिज्ञानके स्वामी	२९२
गुणप्रत्यय अवधिज्ञानके स्वामी	२९२
अवधिज्ञानके भेद–प्रभेद और उनका व्याख्यान	२९२
एकक्षेत्र और अनेकक्षेत्र अवधिज्ञानका विशेष व्याख्यान	२९७
अवधिज्ञानका काल	२९८
क्षण, लव आदि शब्दोंका अर्थ	२९९
जघन्य अवधिज्ञानका क्षेत्र	३०१
अवधिज्ञानके क्षेत्र और कालका एकसाथ विचार	३०४
प्रसंगसे क्षेत्र आदि चारकी वृद्धिका नियम	३०९
भवनत्रिकमें अवधिज्ञानके क्षेत्र और कालका विचार	३१४
सौधर्म कल्प आदिमें अवधिज्ञानके क्षेत्र और कालका विचार	३१६
परमावधिज्ञानके क्षेत्र ओर कालका विचार	३२२
सर्वावधिज्ञानके क्षेत्र और कालके जाननेकी सूचना	३२५
तिर्यञ्चोंमें अवधिज्ञानके उत्कृष्ट द्रव्य तथा नारकियोंमें जघन्य व उत्कृष्ट क्षेत्रका निर्देश	३२५
जघन्य और उत्कृष्ट अवधिज्ञानके स्वामीका निर्देश	३२७
मन:पर्ययज्ञानावरण और उसके भेद	३२८
ऋजुमतिमन:पर्ययज्ञानावरणके भेद व विशेष विचार	३२९
ऋजुमतिमन:पर्यज्ञानका विषय	३३२
प्रकारान्तरसे विषयका निर्देश	३३६
कालकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषय	३३८
क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषय	३३८
विपुलमतिमन:पर्ययज्ञानके छह भेद	३४०
विपुलमतिमन:पर्ययज्ञानका विषय	३४१
प्रकारान्तरसे विषयनिर्देश	३४२
कालकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषय	३४२
क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट विषयका विवरण	३४३
मानुषोत्तर शैलसे ४५ लाख योजनका ग्रहण किया है, इस बातका समर्थन	३४३
केवलज्ञानावरणका निर्देश	३४५
केवलज्ञानका स्वरूपनिर्देश	३४५
केवलज्ञानीका विषय	३४६
दर्शनावरणकी नौ प्रकृतियाँ व उनका स्वरूप	३५३
वेदनीय कर्मकी दो प्रकृतियाँ	३५६
मोहनीय कर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियाँ	३५७

विषय	पृष्ठ
दर्शनमोहनीय कर्मका विचार	३५८
चारित्रमोहनीय कर्मके दो भेद	३५९
कषायवेदनीय कर्मके १६ भेद	३६०
नोकषायवेदनीयके ९ भेद	३६१
आयुकर्म और उसके चार भेद	३६२
नामकर्म और उसकी ४२ पिण्डप्रकृतियाँ तथा उनका स्वरूपनिर्देश	३६३
गति आदि नामकर्मोंके उत्तर भेद	३६७
नरकगत्यानुपूर्वीकी उत्तर प्रकृतियाँ	३७१
तिर्यञ्चगत्यानुपूर्वीकी उत्तर प्रकृतियाँ	३७५
मनुष्यगत्यानुपूर्वीकी उत्तर प्रकृतियाँ	३७७
देवगत्यानुपूर्वीकी उत्तर प्रकृतियाँ	३७७
देवगत्यानुपूर्वीकी उत्तर प्रकृतियाँ	३८२
आनुपूर्वियोंका अल्पबहुत्व	३८४
पुन: वही अल्पबहुत्व	३८६
नामकर्मकी शेष प्रकृतियाँ	३८७
गोत्रकर्म और उसके दो भेद	३८८
शंका-समाधान द्वारा गोत्रकर्मके अस्तित्वकी सिद्धि	३८८
उच्चगोत्र और नीचगोत्रका लक्षण	३८९
अन्तरायकर्मकी पाँच प्रकृतियाँ	३८९
भावप्रकृतिके दो भेद	३९०
आगमभावप्रकृति	३९०
नोआगमभावप्रकृति	३९१
प्रकृतमें कर्मप्रकृति विवक्षित है, इस बातका निर्देश	३९२
शेष भंग वेदनाके समान हैं, इस बातकी सूचना	३९२